भजन

मेहर पिया की रूहों पे अपनी सदा ही रही है सदा ही रहेगी
अगर माया में रूह भूल भी जाए, फिर भी ये साया बन के रहेगी

1) मेहर में उनकी ऐसा असर है, जो नामुमकिन को भी मुमकिन बना दे
रूहों के दिल में अर्श बका की चाहे तो सारी न्यामत सजा दे
फिर इन रुहों से धाम वतन की कोई हकीकत छिपी ना रहेगी
मेहर.....

2) इस मोहजल से मेहर पिया की कब और कैसे पार लगा दे
कोई खबर होने नहीं देती कुछ इस तरह से रखती बचा के
गमे तन्हाई के तूफानों की हर मौज फिर तो किनारा बनेगी
मेहर.....

3) कदम डगमगाए अगर चलते चलते हो मुश्किलें भी चाहे सफर में
कोई सहारा कोई भरोसा जब नहीं आता अपनी नजर में
मेहर तुमारी दे के सहारा तभी भी सहारा होई रहेगी
मेहर पिया.....